मुनि-रक्षा

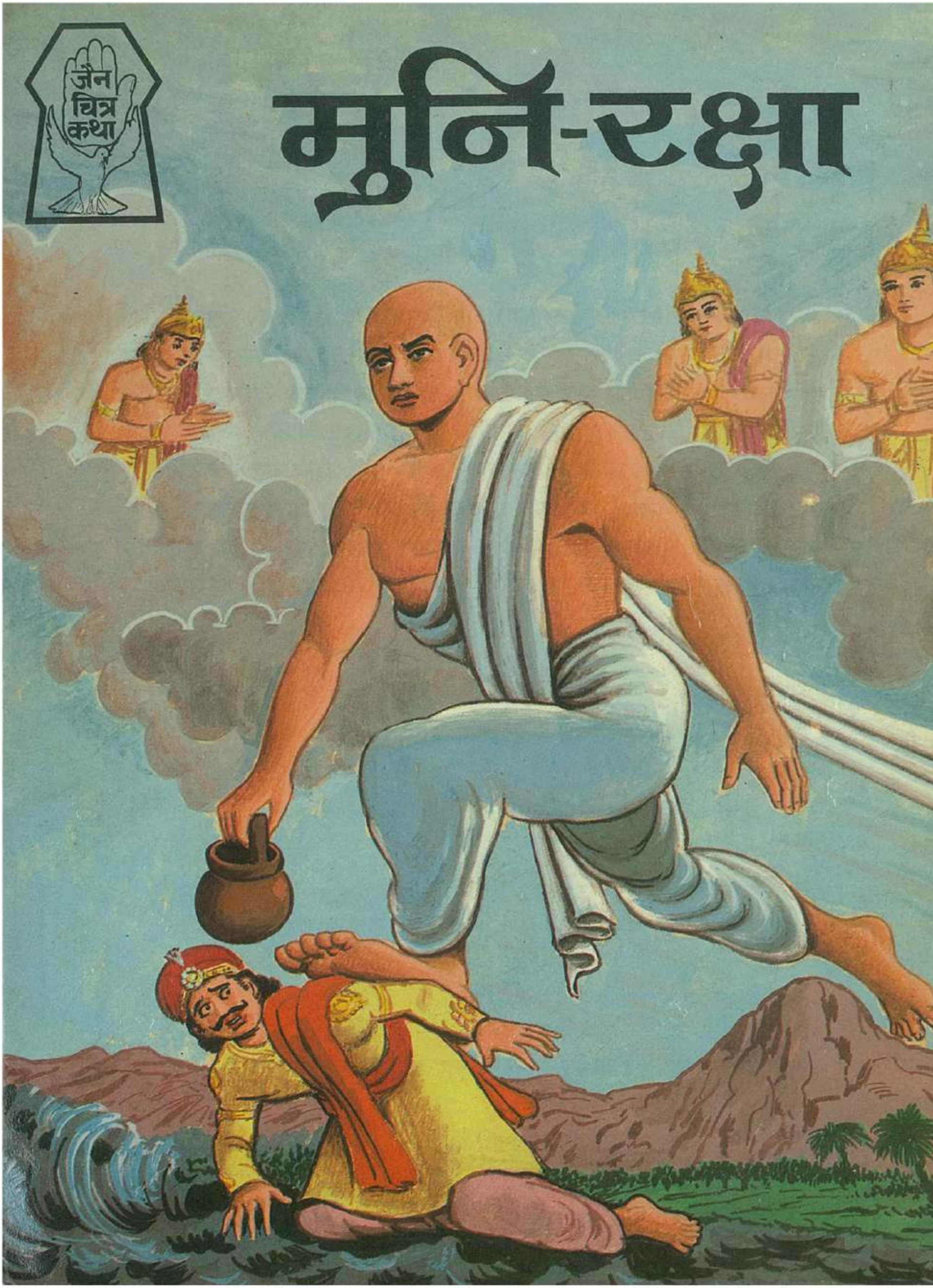

सम्पादकीय

महापुरुष संसार की अनमोल निधि होते हैं। वे अपने ज्ञान, आचरण एवं कार्यों द्वारा संसार को अमूल्य देन देकर जाते हैं। उनका जीवन मानव के लिए दीपस्तम्भ के समान होता है। एक प्रकाश-पुञ्ज घनघोर अन्धकार को नष्ट कर देता है। उसी प्रकार महापुरुषों का जीवन व उपदेश अंधकाराच्छन्न मानव जीवन को प्रकाश से आलोकित कर देता है। वह अज्ञान रूपी अन्धकार में भटकने वाले मानव को दिव्य प्रकाश देता है। मानव का क्या कर्त्तव्य है ? मानव-जीवन की सार्थकता किसमें है ? यह सब उस प्रकाश में हमें स्पष्ट दिखाई देता है। यह सब जैन चित्र कथा के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

ब्र. धर्मचंद शास्त्री

प्रकाशक : आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला
गोधा सदन, अलसीसर हाउस, संसारचंद रोड, जयपुर

सम्पादक : धर्मचंद शास्त्री

लेखक : डॉ. मूलचंद जी जैन, मुजफ्फरनगर

चित्रकार : बने सिंह

प्रकाशन वर्ष ३ १९९० अंक २० मूल्य ६/-

जैन चित्र कथाओं के प्रकाशन के इस पावन पुनीत महायज्ञ में संस्था को सहयोग प्रदान करें।

परम संरक्षक	संरक्षक	आजीवन
११११११	५००१	१५०१

प्राप्ति स्थान : श्री दि. जैन मन्दिर गुलाब बाटिका दिल्ली

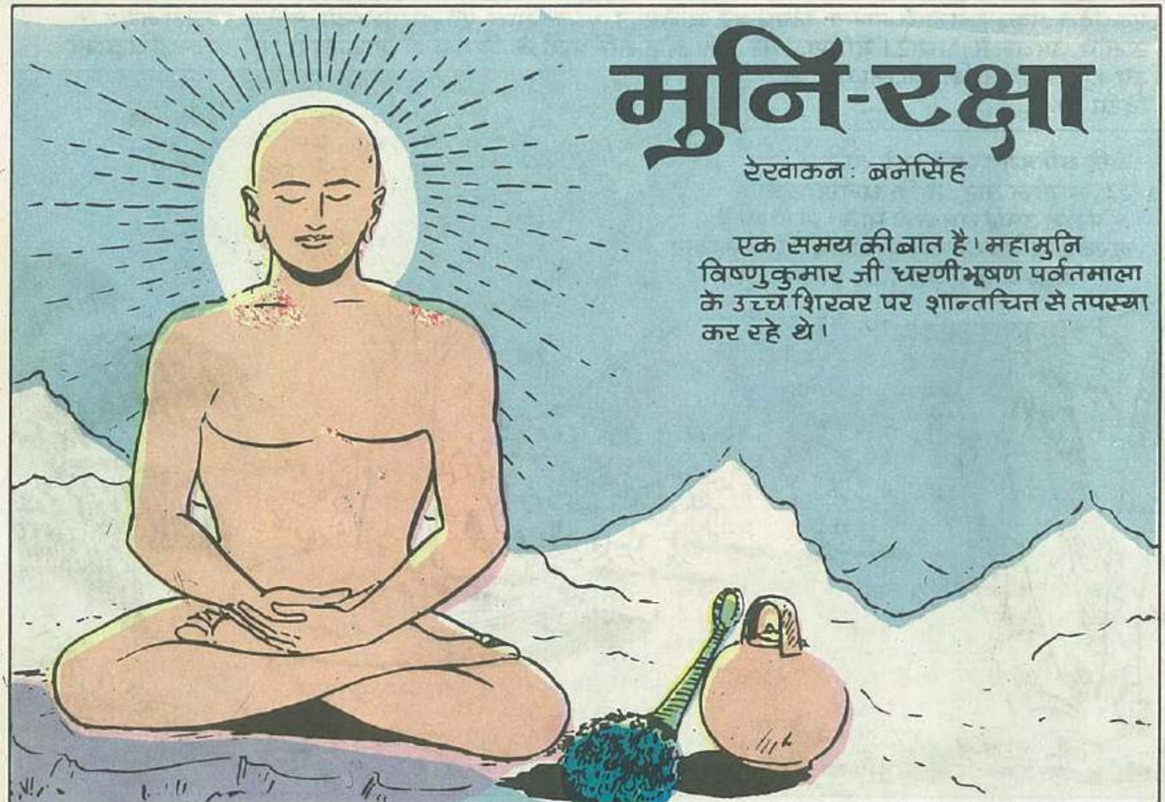
मुनि-रक्षा
रेखांकन : बनेसिंह
एक समय की बात है। महामुनि विष्णुकुमार जी धरणीभूषण पर्वतमाला के उच्च शिखर पर शान्तचित्त से तपस्या कर रहे थे।

उस काल में भारत के धर्म प्रधान नगर उज्जैन में महाराज श्रीबर्मा राज्य करते थे। वे जैनधर्म के अनुयायी थे, विश्वमैत्री और परोपकार की भावना के पोषक थे। उनके दरबार में चतुर किन्तु चालाक चार मन्त्री थे। उनके नाम क्रमशः बलिचन्द्र, वृहस्पतिकुमार, प्रहलादचन्द्र और नमुचिकुमार थे। ये चारों मन्त्री सत्यासत्य का भेद किये बिना ही अपनी स्वार्थसिद्धि हेतु तत्पर रहते थे। जो जन उन्हें जानते थे, वे उन्हें मिथ्यात्वी मानते थे।

एक दिन अकम्पनाचार्य नामक दिगम्बर मुनिराज अपने सात सौ मुनिशिष्यों सहित उज्जैन नगर के समीप, उपवन में, पधारे। मुनिराज को राजा और मन्त्रियों के विषय में जानकारी थी, वे अवधिज्ञानी जो थे। उन्होंने शिष्यों को निर्देश दिया कि . . .
यदि मन्त्रिगण यहां आवें तो सब चुप रहें, वार्ता न करें, ताकि धर्मसाधना में कुप्रसंग उपस्थित न हो पावे। सच भी है, मूर्ख और मिथ्यात्वी के समक्ष मौन रहकर ही विसम्वाद बचाया जा सकता है।

महाराज श्रीवर्मा मुनि-संघ के दर्शन के लिए तैयार होने लगे। उनका उत्साह देखकर मन्त्रियों को मन ही मन ईर्ष्या हो आई, किन्तु कुछ कह नहीं सके, महाराज तथा महारानी का अनुसरण करते हुये उनके पीछे-पीछे चले गए।
राजदम्पत्ती ने श्रद्धा से मुनि-बन्दना की मुनियों ने मौन रहते हुए, उन्हें आशिष दिये।

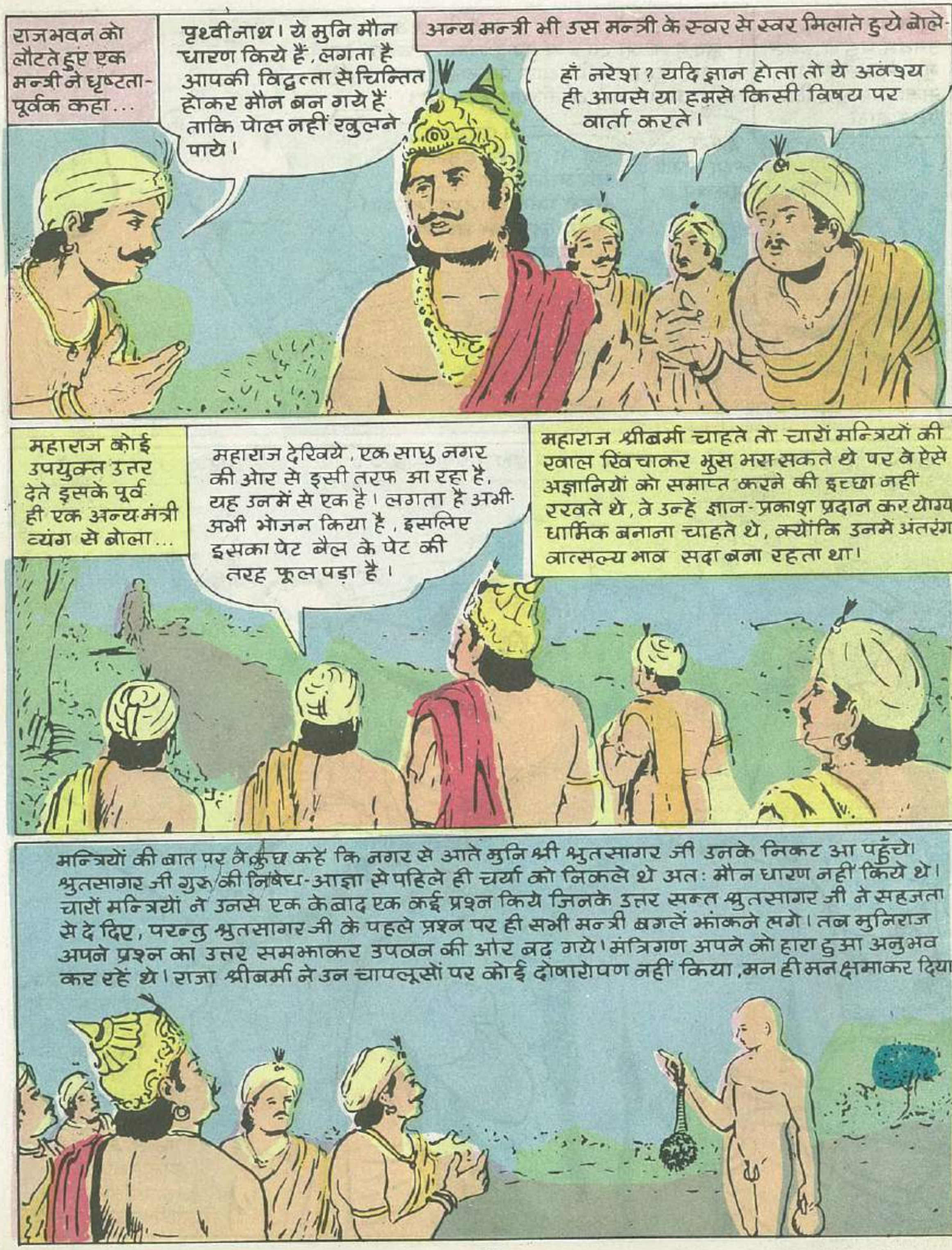
राजभवन को लौटते हुए एक मन्त्री ने धृष्टता-पूर्वक कहा...
पृथ्वीनाथ। ये मुनि मौन धारण किये हैं, लगता है आपकी विद्वत्ता से चिन्तित होकर मौन बन गये हैं ताकि पोल नहीं खुलने पाये।
अन्य मन्त्री भी उस मन्त्री के स्वर से स्वर मिलाते हुये बोले-
हाँ नरेश ? यदि ज्ञान होता तो ये अवश्य ही आपसे या हमसे किसी विषय पर वार्ता करते।
महाराज कोई उपयुक्त उत्तर देते इसके पूर्व ही एक अन्य मंत्री व्यंग से बोला...
महाराज देखिये, एक साधु नगर की ओर से इसी तरफ आ रहा है, यह उनमें से एक है। लगता है अभी-अभी भोजन किया है, इसलिए इसका पेट बैल के पेट की तरह फूल पड़ा है।
महाराज श्रीबर्मा चाहते तो चारों मन्त्रियों की खाल खिंचाकर भुस भरा सकते थे पर वे ऐसे अज्ञानियों को समाप्त करने की इच्छा नहीं रखते थे, वे उन्हें ज्ञान-प्रकाश प्रदान कर योग्य धार्मिक बनाना चाहते थे, क्योंकि उनमें अंतरंग वात्सल्य भाव सदा बना रहता था।
मन्त्रियों की बात पर वे कुछ कहें कि नगर से आते मुनि श्री श्रुतसागर जी उनके निकट आ पहुँचे। श्रुतसागर जी गुरु की निषेध-आज्ञा से पहिले ही चर्या को निकले थे अतः मौन धारण नहीं किये थे। चारों मन्त्रियों ने उनसे एक के बाद एक कई प्रश्न किये जिनके उत्तर सन्त श्रुतसागर जी ने सहजता से दे दिए, परन्तु श्रुतसागर जी के पहले प्रश्न पर ही सभी मन्त्री बगलें झांकने लगे। तब मुनिराज अपने प्रश्न का उत्तर समझाकर उपवन की ओर बढ़ गये। मंत्रिगण अपने को हारा हुआ अनुभव कर रहें थे। राजा श्रीबर्मा ने उन चापलूसों पर कोई दोषारोपण नहीं किया, मन ही मन क्षमाकर दिया

मुनि श्रुतसागर उपवन पहुँचे, उनसे गुरू ने रास्ते का समाचार पूछ लिया फिर बोले...
शिष्य, मुझे आभास होता है कि वे कठोर हृदय मन्त्री रात्रि में तुम्हें समाप्त करने आयेंगे, अतः तुम्हें उसी स्थान पर चला जाना चाहिये जहां उनसे वार्तालाप हुआ था।
इससे क्या होगा गुरूवर ?
या तो उनका हृदय-परिवर्तन होगा या उन्हें अपने किये का दण्ड मिलेगा। तुम्हें निमित्त बनना अवश्यम्भावी है

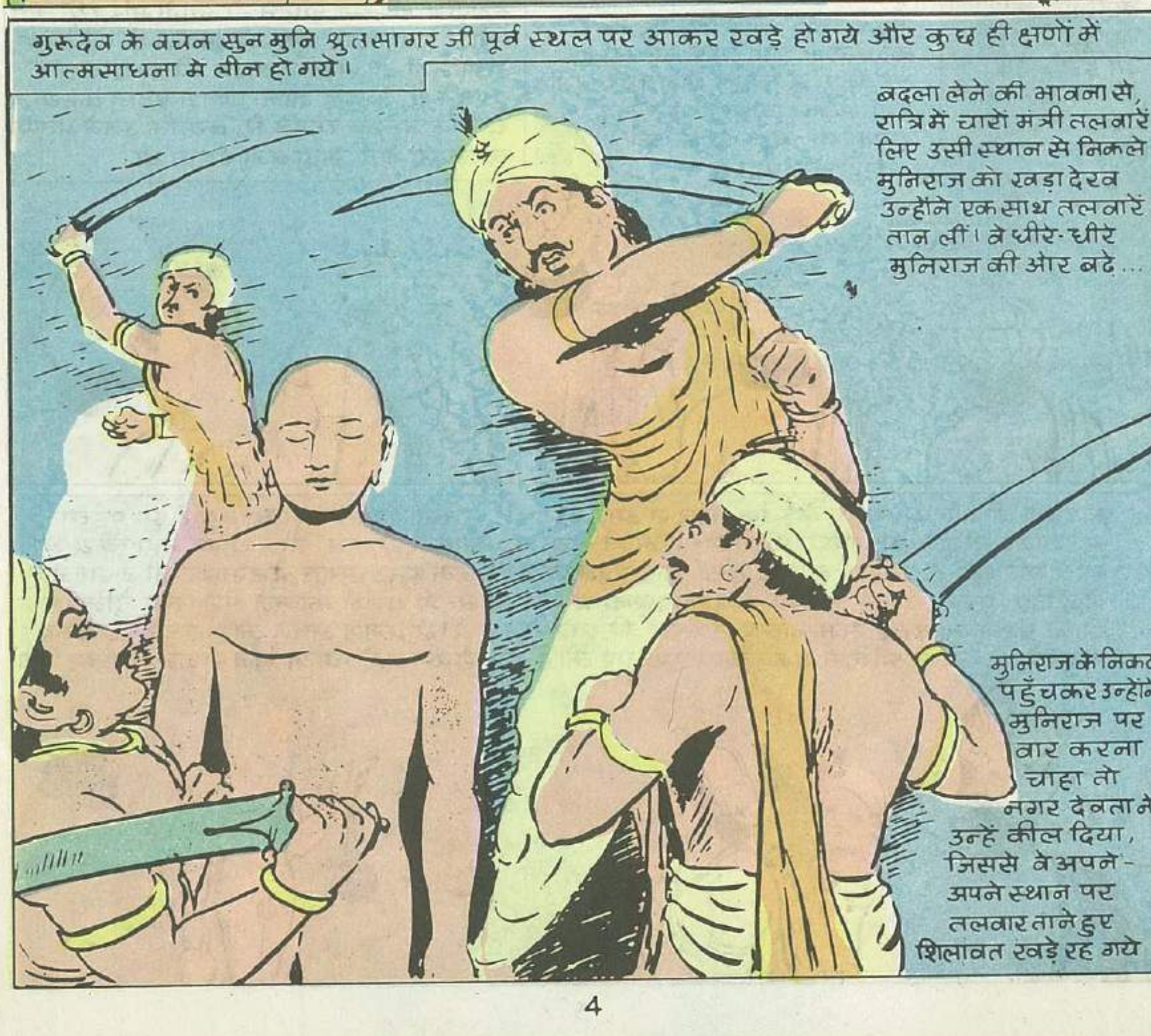
गुरूदेव के वचन सुन मुनि श्रुतसागर जी पूर्व स्थल पर आकर खड़े हो गये और कुछ ही क्षणों में आत्मसाधना में लीन हो गये।
बदला लेने की भावना से, रात्रि में चारों मंत्री तलवारें लिए उसी स्थान से निकले मुनिराज को खड़ा देख उन्होंने एक साथ तलवारें तान लीं। वे धीरे-धीरे मुनिराज की ओर बढ़े...
मुनिराज के निकट पहुँचकर उन्होंने मुनिराज पर वार करना चाहा तो नगर देवता ने उन्हें कील दिया, जिससे वे अपने-अपने स्थान पर तलवार ताने हुए शिलावत खड़े रह गये

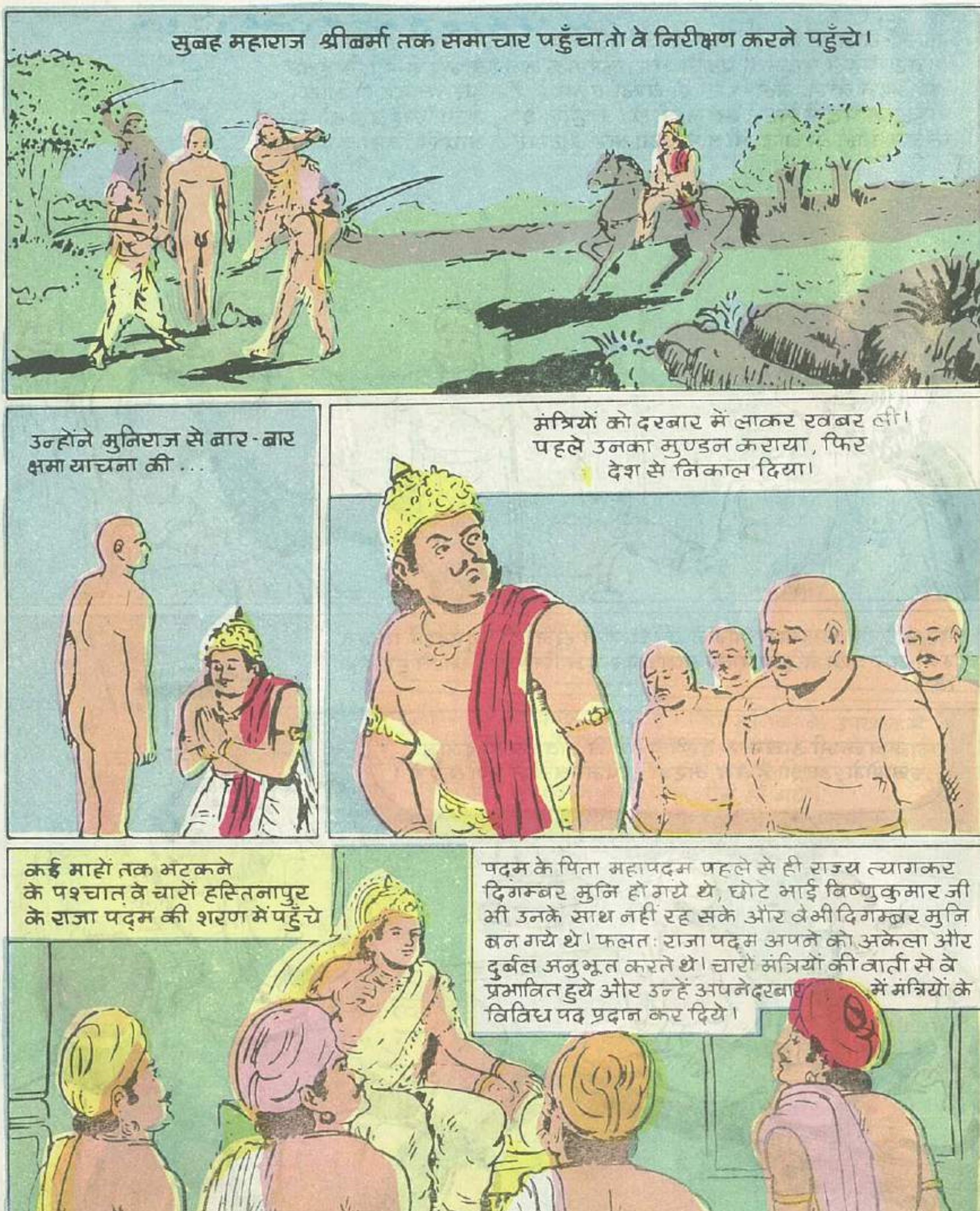
सुबह महाराज श्रीवर्मा तक समाचार पहुँचा तो वे निरीक्षण करने पहुँचे।
उन्होंने मुनिराज से बार-बार क्षमा याचना की ...
मंत्रियों को दरबार में लाकर खबर ली। पहले उनका मुण्डन कराया, फिर देश से निकाल दिया।
कई माहों तक भटकने के पश्चात् वे चारों हस्तिनापुर के राजा पद्म की शरण में पहुँचे
पद्म के पिता महापद्म पहले से ही राज्य त्यागकर दिगम्बर मुनि हो गये थे, छोटे भाई विष्णुकुमार जी भी उनके साथ नहीं रह सके और वे भी दिगम्बर मुनि बन गये थे। फलतः राजा पद्म अपने को अकेला और दुर्बल अनुभूत करते थे। चारों मंत्रियों की वार्ता से वे प्रभावित हुये और उन्हें अपने दरबार में मंत्रियों के विविध पद प्रदान कर दिये।

मन्त्री चालाक थे ही, अत: राजा पदम पर अपना विश्वास जमाने सबसे पहले पदम के प्रबल शत्रु, कुम्भक नगर के नरेश श्री सिंहबल को अपने कल-बल-छल से बन्दी बनाया और हस्तिनापुर ले आये। महाराज पदम सरल स्वभावी थे। उन्होंने शत्रु राजा सिंहबल को अपने निकट पाने के बाद भी उसे क्षमा कर वात्सल्य भाव से विदा कर दिया...

और मंत्रियों को इनाम मांगने की घोषणा सुना दी। दूरदर्शी किन्तु दम्भी मन्त्रियों ने इनाम की बात को सहज निरूपित करते हुए कहा कि ...
जब कभी अवसर देखेंगे तब वे अवश्य ही इनाम मागेंगें, आशा है तब नरेश अपना वचन पूर्ण करेंगे।

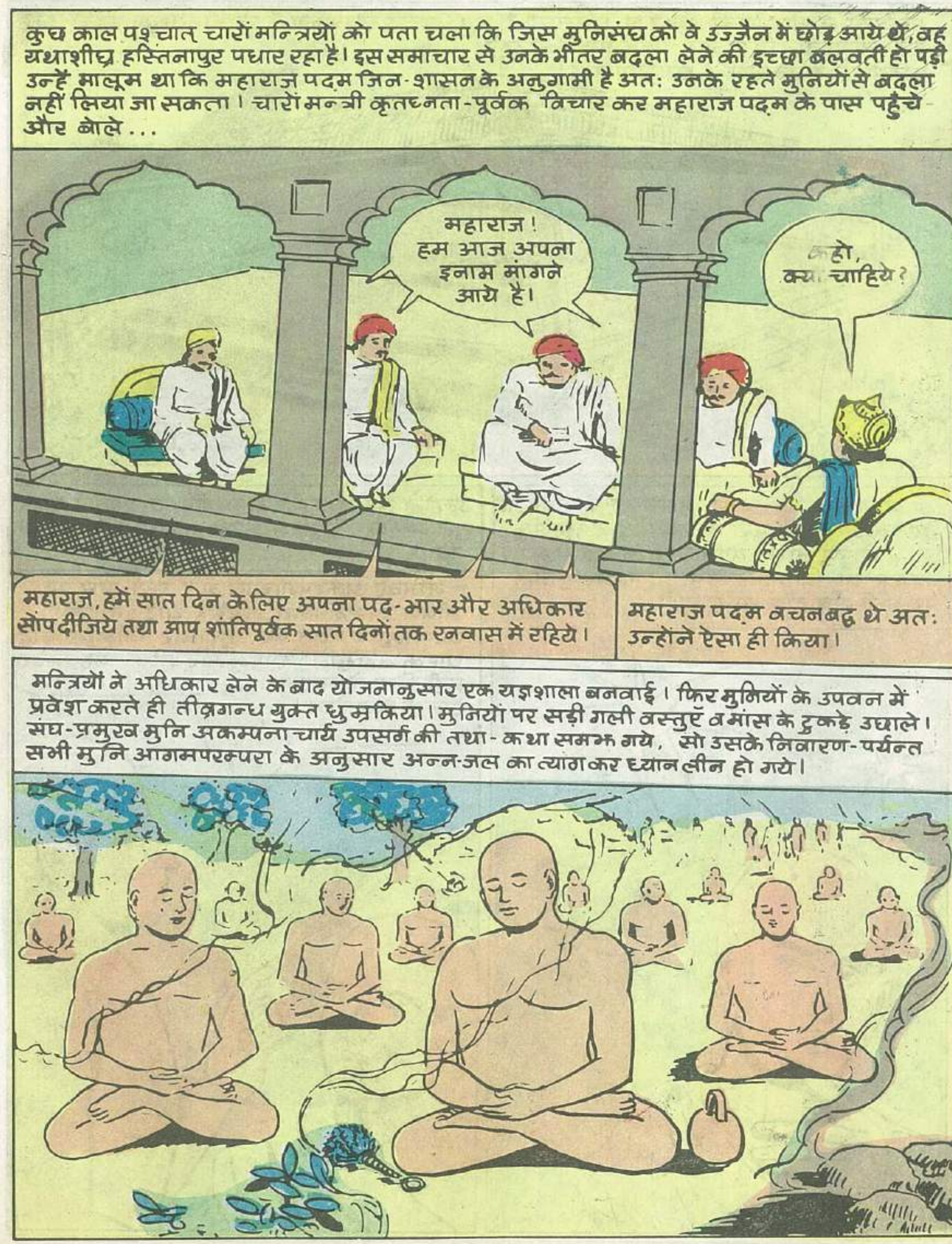
कुछ काल पश्चात् चारों मन्त्रियों को पता चला कि जिस मुनिसंघ को वे उज्जैन में छोड़ आये थे, वह यथाशीघ्र हस्तिनापुर पधार रहा है। इस समाचार से उनके भीतर बदला लेने की इच्छा बलवती हो पड़ी उन्हें मालूम था कि महाराज पदम जिन-शासन के अनुगामी है अत: उनके रहते मुनियों से बदला नहीं लिया जा सकता। चारों मन्त्री कृतघ्नता-पूर्वक विचार कर महाराज पदम के पास पहुँचे और बोले...
महाराज! हम आज अपना इनाम मांगने आये है।
कहो, क्या चाहिये?
महाराज, हमें सात दिन के लिए अपना पद-भार और अधिकार सोंप दीजिये तथा आप शांतिपूर्वक सात दिनों तक रनवास में रहिये।
महाराज पदम वचनबद्ध थे अत: उन्होंने ऐसा ही किया।
मन्त्रियों ने अधिकार लेने के बाद योजनानुसार एक यज्ञशाला बनवाई। फिर मुनियों के उपवन में प्रवेश करते ही तीव्रगन्ध युक्त धुम्र किया। मुनियों पर सड़ी गली वस्तुएँ व मांस के टुकड़े उछाले। संघ-प्रमुख मुनि अकम्पनाचार्य उपसर्ग की तथा-कथा समझ गये, सो उसके निवारण-पर्यन्त सभी मुनि आगमपरम्परा के अनुसार अन्न-जल का त्याग कर ध्यान लीन हो गये।

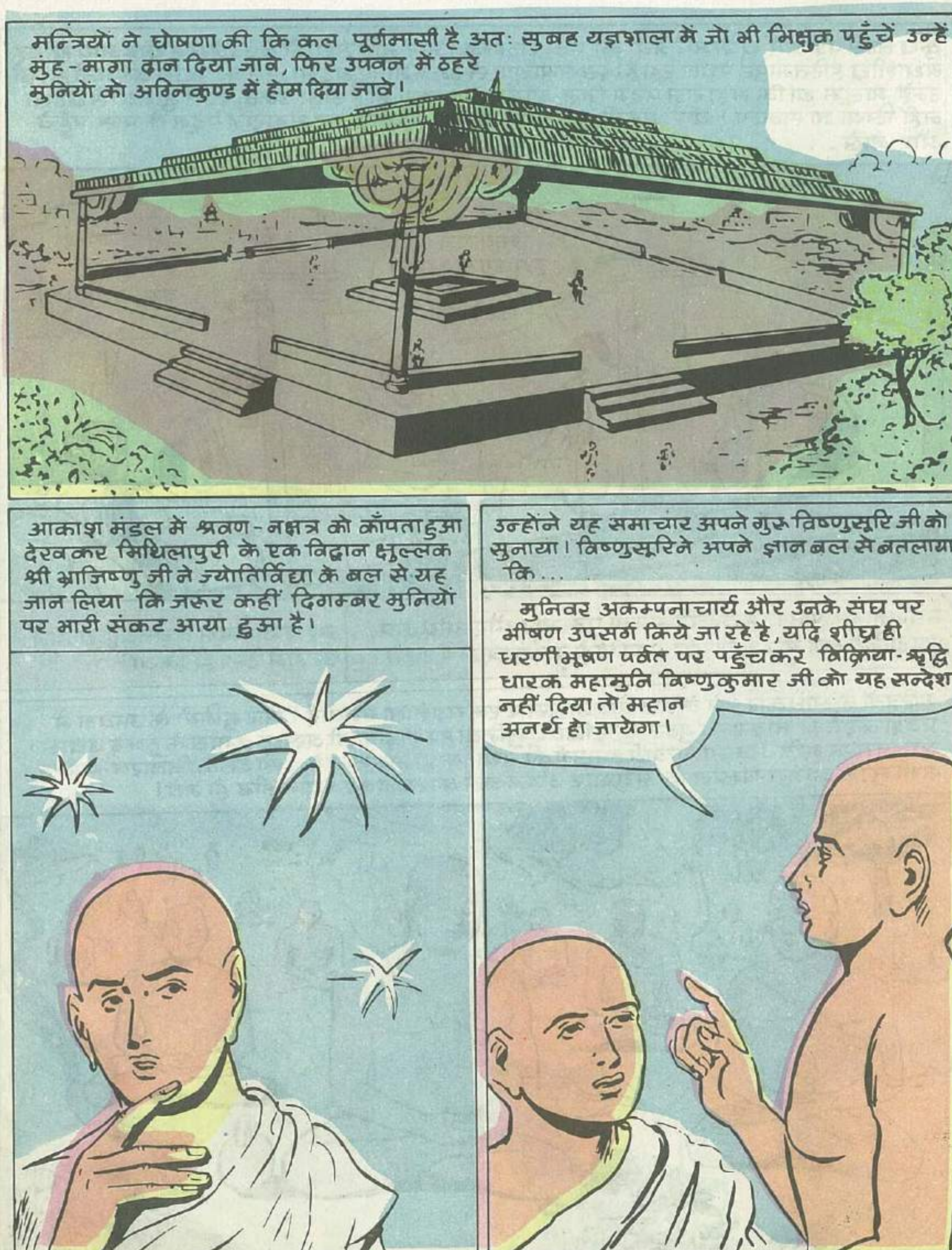
मन्त्रियों ने घोषणा की कि कल पूर्णमासी है अतः सुबह यज्ञशाला में जो भी भिक्षुक पहुँचें उन्हें मुंह-मांगा दान दिया जावे, फिर उपवन में ठहरे मुनियों को अग्निकुण्ड में होम दिया जावे।
आकाश मंडल में श्रवण-नक्षत्र को काँपता हुआ देखकर मिथिलापुरी के एक विद्वान क्षुल्लक श्री भ्राजिष्णु जी ने ज्योतिर्विद्या के बल से यह जान लिया कि जरूर कहीं दिगम्बर मुनियों पर भारी संकट आया हुआ है।
उन्होंने यह समाचार अपने गुरु विष्णुसूरि जी को सुनाया। विष्णुसूरिने अपने ज्ञान बल से बतलाया कि ...
मुनिवर अकम्पनाचार्य और उनके संघ पर भीषण उपसर्ग किये जा रहे है, यदि शीघ्र ही धरणीभूषण पर्वत पर पहुँचकर विक्रिया-ऋद्धि धारक महामुनि विष्णुकुमार जी को यह सन्देश नहीं दिया तो महान अनर्थ हो जायेगा।

क्षुल्लक भ्राजिष्णु ने विद्याधर पुष्पदन्त को सूचना दी। पुष्पदन्त विद्याबल से अल्पसमय में महामुनि विष्णुकुमार की शरण में उपस्थित हो गये और पूरी वार्ता कह सुनाई। तब महामुनि बोले...
विद्याधर, इस हेतु मैं क्या कर सकता हूँ
नाथ, आप तो विक्रिया-ऋद्धि के धारक है।
लेकिन मुझे तो ज्ञात नहीं।
महामुने? अवलोकन कर देख लें।
विद्याधर के कहने से महामुनि ने अपना एक हाथ फैलाया तो वह सहस्त्रों योजन बढ कर मानुषोत्तर पर्वत तक जा पहुँचा। महामुनि को अपनी ऋद्धि पर विश्वास हुआ, हाथ समेटा...

और विचार कर हस्तिनापुर जा पहुँचे। महामुनि को मंत्री बलिचंद्र की योजना समझते देर नहीं लगी। उन्होंने एक ठिगने (बौने) भिक्षुक का रूप धारण किया और श्लोकों-ऋचाओं का उच्चारण करते हुये ब्रह्ममुहूर्त में बलि के समक्ष जा पहुँचे। बलिचंद्र भिक्षुक से बोले...
बस-बस, श्लोक-फिश्लोक रहने दो, तुम्हें जो चाहिये हो सो मांगों, मैं-पृथ्वीनरेश बलि-तुम्हारे भाग्य को चमका दूँगा। मांगों।
बलि की दम्भोक्ति पर भिक्षुक मुस्काने लगा, फिर संयत स्वर में बोला...
महाराज मुझे मात्र तीन पग भूदान देने की कृपा करें।
भिक्षुक की मांग पर बलि ठिलठिला कर हंस पड़ा, कहने लगा...
भिक्षुक तुम मांगने में भी अपने स्वरूप की तरह छोटे निकले, जाओ नापलो, दी तुम्हें तीन पग धरती।

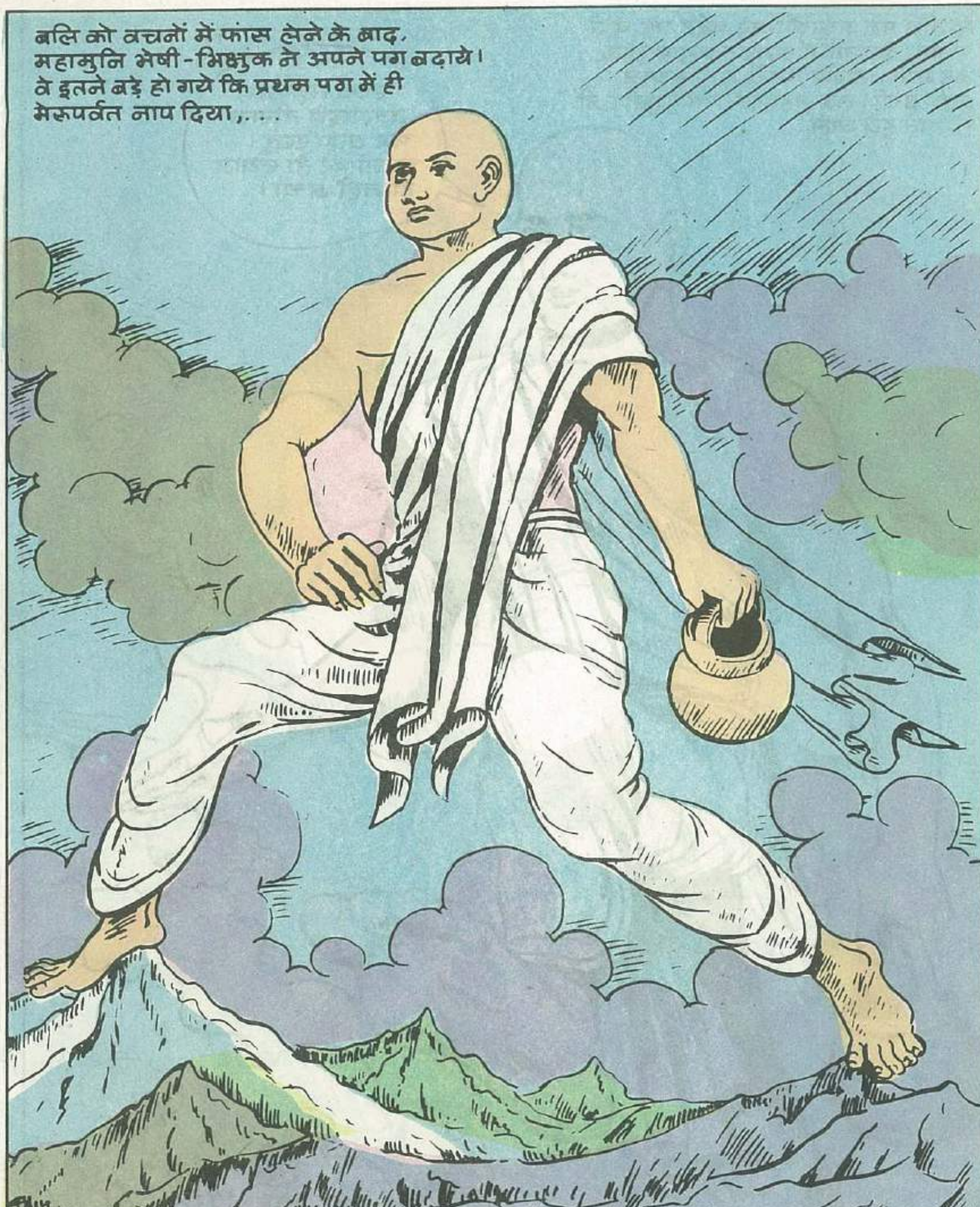
बलि को वचनों में फांस लेने के बाद,
महामुनि भेषी-भिक्षुक ने अपने पग बढ़ाये।
वे इतने बड़े हो गये कि प्रथम पग में ही
मेरूपर्वत नाप दिया,...

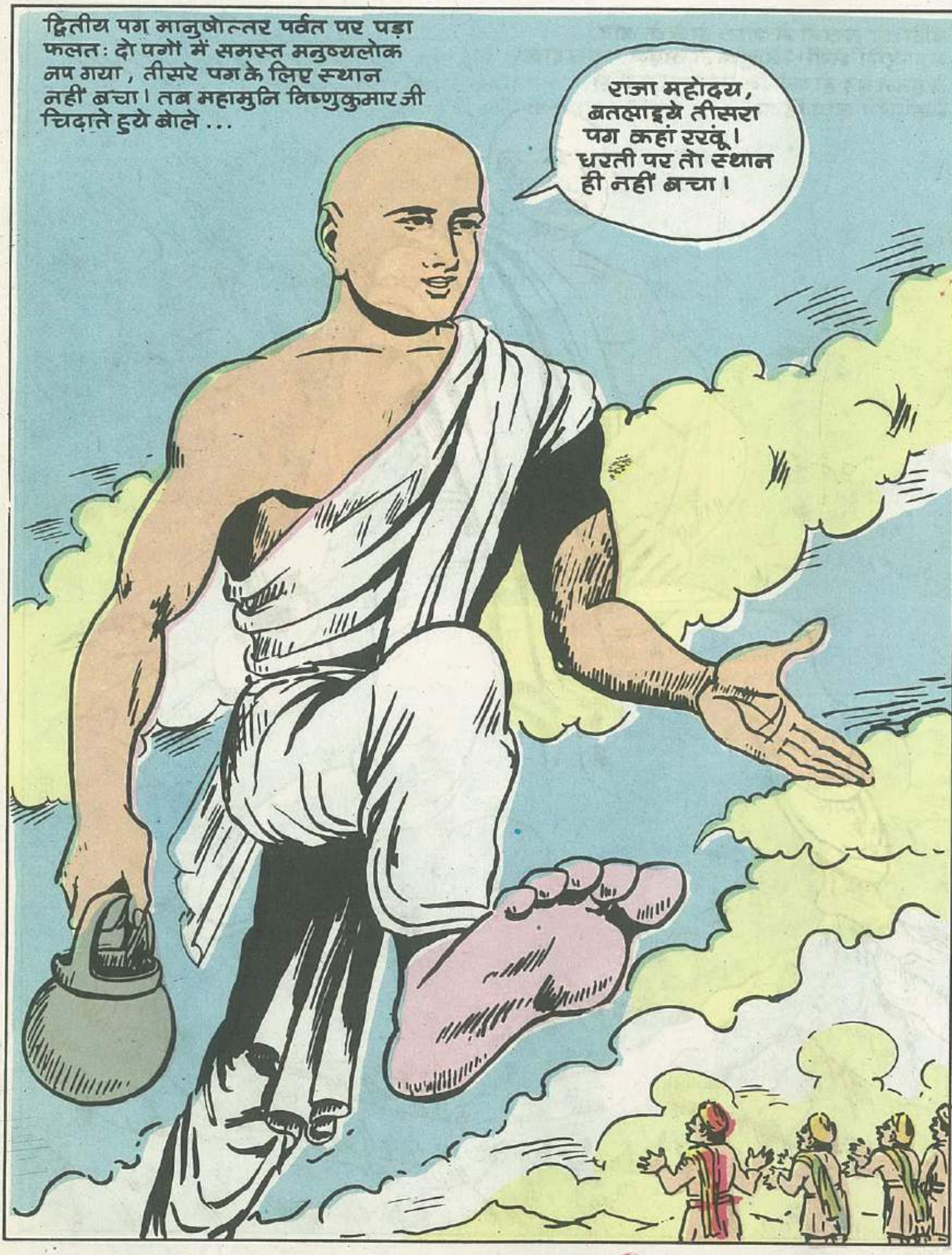
द्वितीय पग मानुषोत्तर पर्वत पर पड़ा फलत: दो पगों में समस्त मनुष्यलोक नप गया, तीसरे पग के लिए स्थान नहीं बचा। तब महामुनि विष्णुकुमार जी चिढ़ाते हुये बोले ...
राजा महोदय, बतलाइये तीसरा पग कहां रखूं। धरती पर तो स्थान ही नहीं बचा।

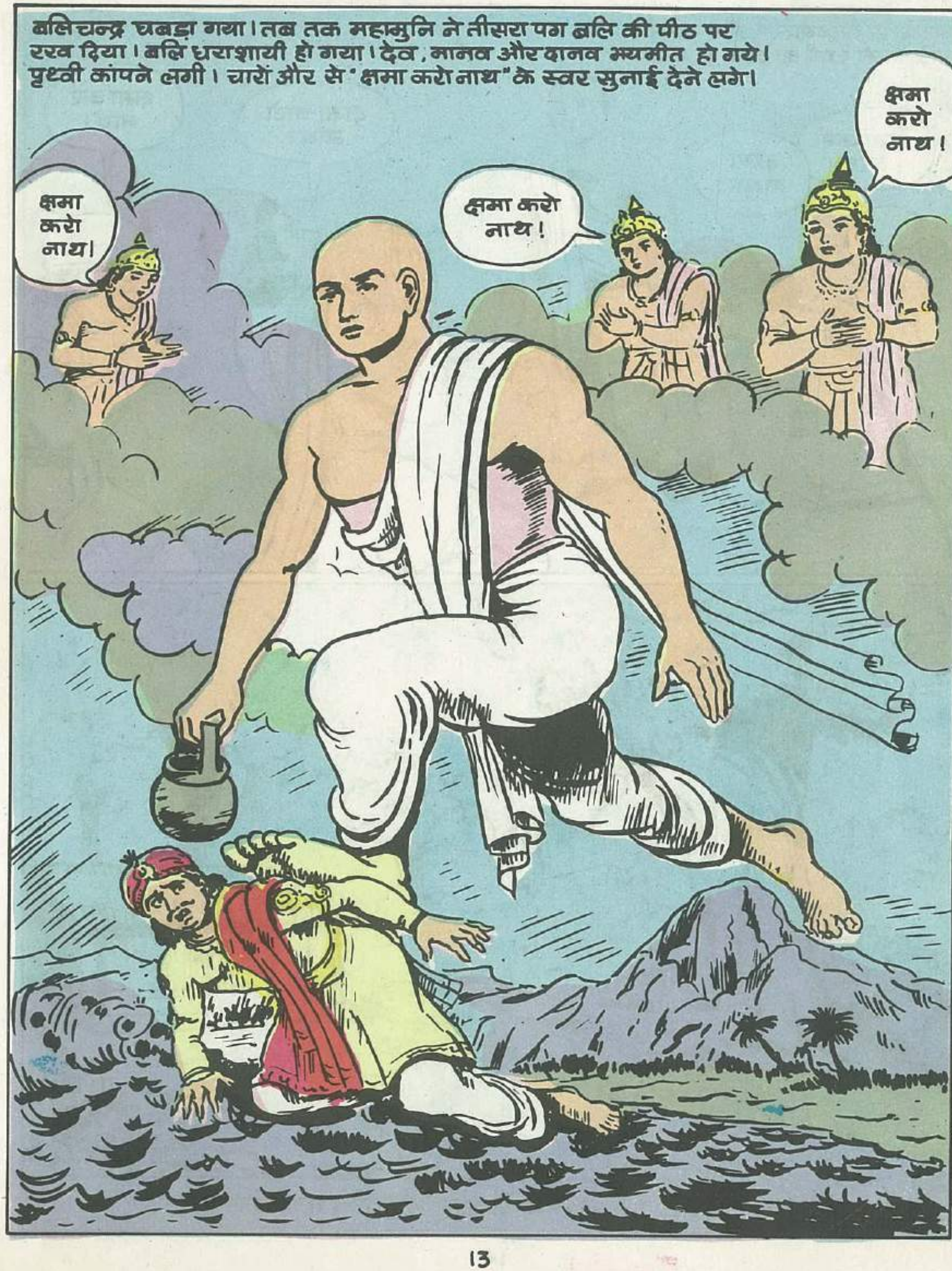
बलिचन्द्र घबड़ा गया। तब तक महामुनि ने तीसरा पग बलि की पीठ पर रख दिया। बलि धराशायी हो गया। देव, मानव और दानव भयभीत हो गये। पृथ्वी कांपने लगी। चारों ओर से "क्षमा करो नाथ" के स्वर सुनाई देने लगे।
क्षमा करो नाथ।
क्षमा करो नाथ!
क्षमा करो नाथ!

घटना से मिथ्यात्वी और दम्भी मंत्रियों को धर्म का ज्ञान हो गया।
क्षमा करें नाथ!
क्षमा करना!
क्षमा करो नाथ!
क्षमा करें नाथ!

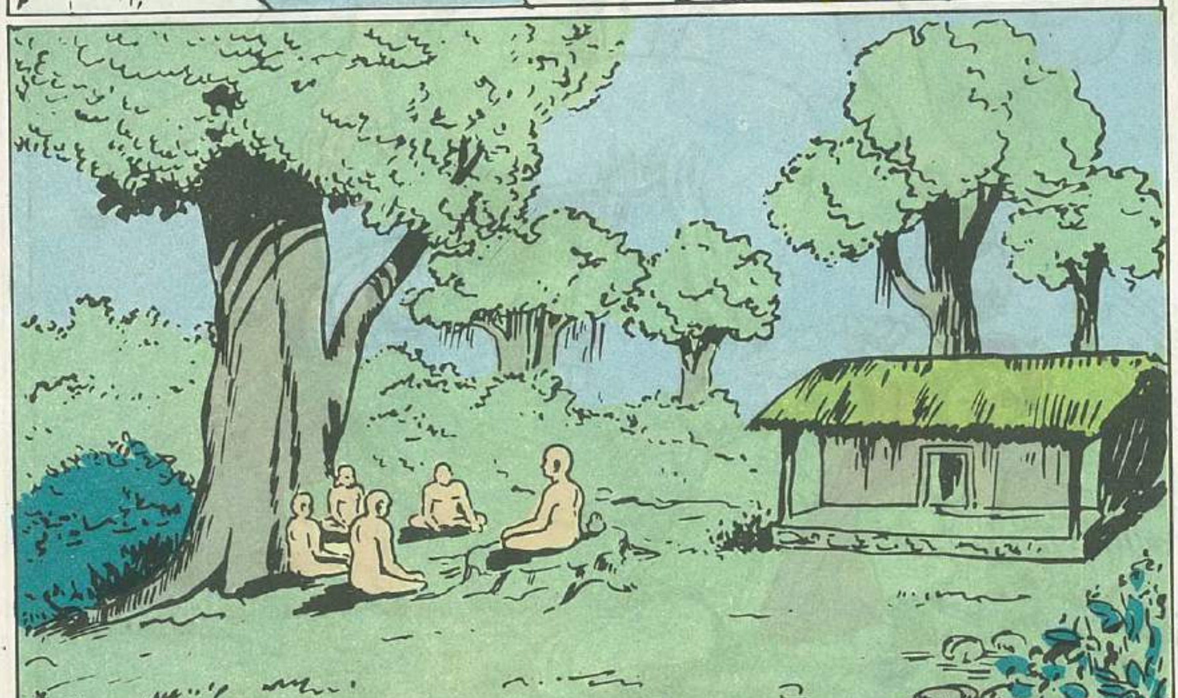
वे सभी जैनधर्म में प्रवृत्त व दीक्षित हुये।

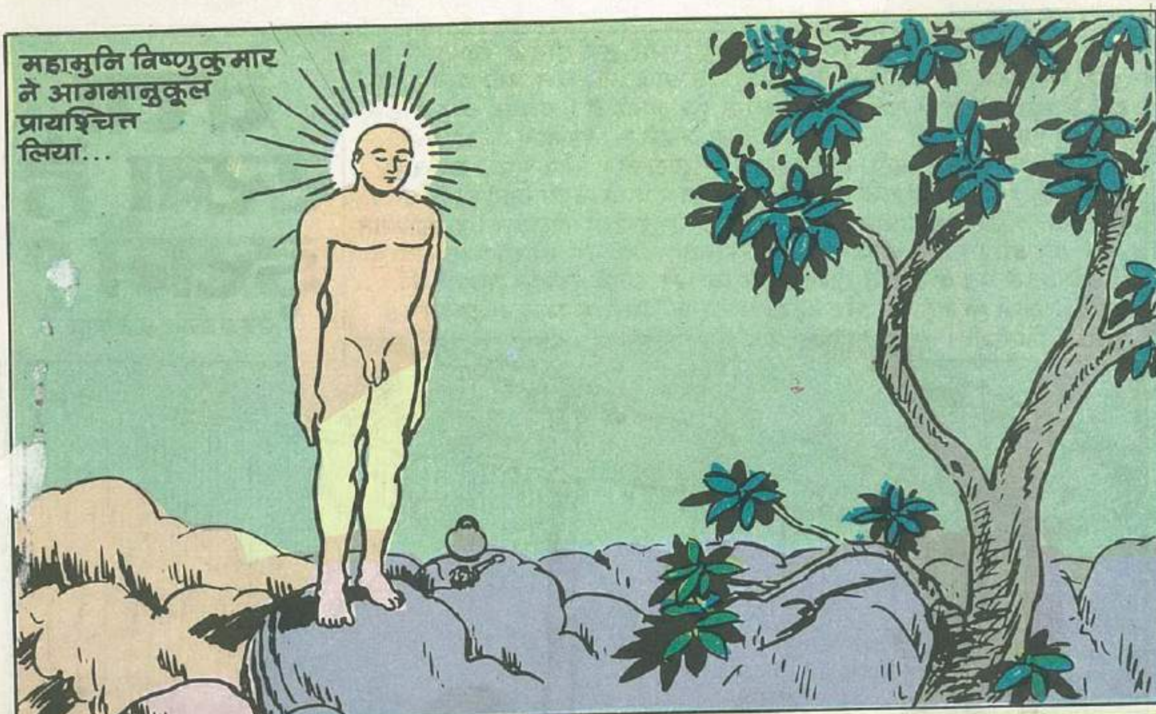

श्रावण सुदी पूर्णिमा का दिन, तभी से रक्षाबन्धन का दिन कहलाता है। इस दिन सात सौ मुनियों की रक्षा की गई थी, तथा उपसर्ग ढाने वाले आताताइयों को जिनधर्म परायण बनाया गया था।

धन के पीछे आज सभी तो दौड़ रहे हैं। और इस दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने की फिक्र में हैं। और धन आये, और धन आये इसी उधेड़-बुन में सुबह से शाम तक हम पागल से हुए जा रहे हैं। अव्वल तो धन इस तरह से आता ही नहीं, उल्टे गलत काम करने से, बेईमानी से, धोखे से, चोरी से धन आता ही नहीं। धन आता है पुण्य से। और पुण्य बनता है अच्छे कामो से। और यदि मान भी लिया जाये कि धन आ जायेगा तो साथ में क्या लायेगा यह धन— आकुलता, परेशानी, हैवानियत। इन्सानियत नाम की कोई चीज नहीं रह जाती धनवान में। तो सोचो क्या रखा है इसमें। इसे पढ कर यदि अन्याय से, पाप से, धोखे से धन कमाने की इच्छा कम हो गई तो और कुछ मिले न मिले परन्तु मनुष्यता अवश्य मिलेगी।
क्या रखा है इसमें?
रेखांकन: बने सिंह
दो भाई थे, बड़ा था अहिदेव और छोटे का नाम था महिदेव एक थी उनकी छोटी बहिन, और थी उनकी मां। बस यह था परिवार। बहुत गरीब थे बेचारे-दो समय भोजन भी कठिनता से मिलता था। परन्तु आपस में था अटूट प्रेम। एक दिन...

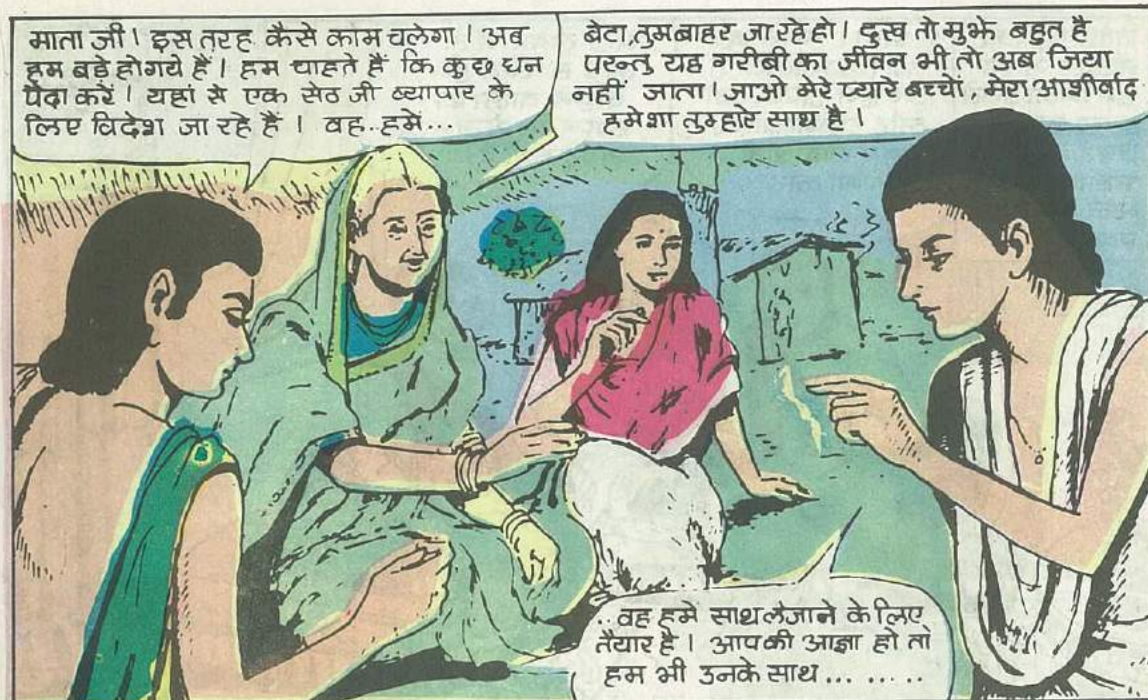
माता जी। इस तरह कैसे काम चलेगा। अब हम बड़े होगये हैं। हम चाहते हैं कि कुछ धन पैदा करें। यहां से एक सेठ जी व्यापार के लिए विदेश जा रहे हैं। वह..हमें...
..वह हमे साथ लेजाने के लिए तैयार है। आपकी आज्ञा हो तो हम भी उनके साथ ... .
बेटा, तुम बाहर जा रहे हो। दुख तो मुझे बहुत है परन्तु यह गरीबी का जीवन भी तो अब जिया नहीं जाता। जाओ मेरे प्यारे बच्चों, मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है।

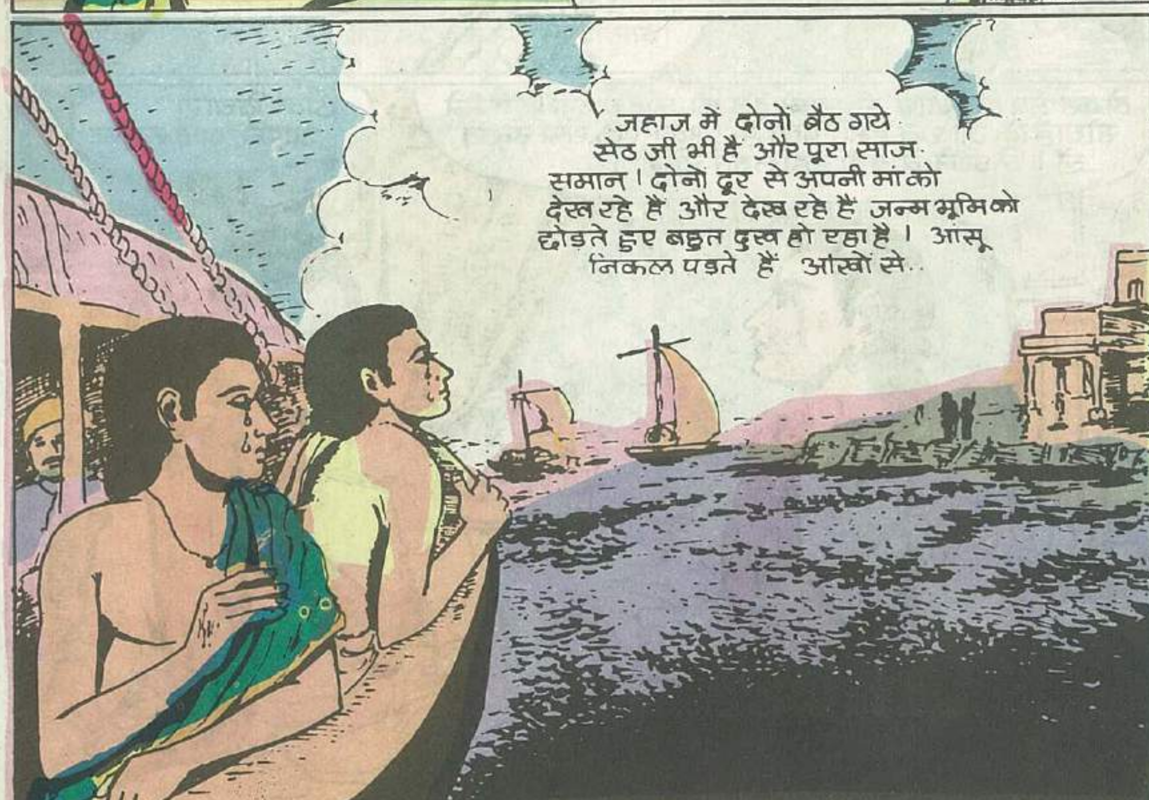
जहाज में दोनो बैठ गये सेठ जी भी हैं और पूरा साज समान। दोनों दूर से अपनी मां को देख रहे हैं और देख रहे हैं जन्म भूमि को छोड़ते हुए बहुत दुख हो रहा है। आंसू निकल पड़ते हैं आंखों से..

विदेश पहुंचकर नौकरी से जो धन मिला उससे अपना व्यापार किया। खूब धन कमाया। माला माल हो गये वे एक दिन...
भैया। हमने खूब धन कमा लिया है। अब हमें अपने देश लौट चलना चाहिए। बहुत याद आती है मां की।
भाई साहब मैं तो आप से स्वयं ही कहने वाला था स्वप्न में रोज मां दिखती है।

तो बस अब हम शीघ्र ही अपने देश को लौट चलेंगे। हां मैंने सोचा है कि जो धन हमारे पास है उसका एक रत्न खरीद लें। लेजाने में बड़ी सहूलियत रहेगी।
ठीक विचारा आपने भाई साहब

रत्न खरीद लिया गया। रत्न लेकर चल दिये अपने देश को।

रत्न था अहिदेव के पास। रात्रि हुई और......
रत्न बड़ा सुन्दर है और कीमती भी। परन्तु दुख की बात यह है कि यह साझे की चीज है। छोटे भाई का भी हिस्सा इसमें है। परन्तु यह ऐसी चीज नहीं कि उसे भी दी जाये। फिर...... फिर क्या उसको धक्का दूं समुद्र में और बस रत्न मेरा और मेरा...

सारी रात इसी उधेड़-बुन में रहा। नींद नहीं आई। प्रातः हुआ और..
रातको जो मैंने सोचा था। कितना गलत था। छोटे भाई की हत्या। उफ धिक्कार है मुझे। कितना प्यारा भाई है मेरा। ऐसे प्यारे भाई की जान ले लूं और वह भी इस पत्थर के टुकड़े के लिए। नहीं नहीं, ऐसा हरगिज नहीं करूंगा। चलूं रत्न उसे सौंप दूं।
भैया, लो यह रत्न तुम लो। मैंने इसे अपने पास बहुत दिन रख लिया-अब तुम रखो इसे अपने पास कुछ दिन
भाई साहब, आप ही रखो न इसे अपने पास
नहीं नहीं भैया। मैं नहीं रखूंगा। लो यह तुम रखो।
अच्छा भाई साहब जैसी आप की इच्छा

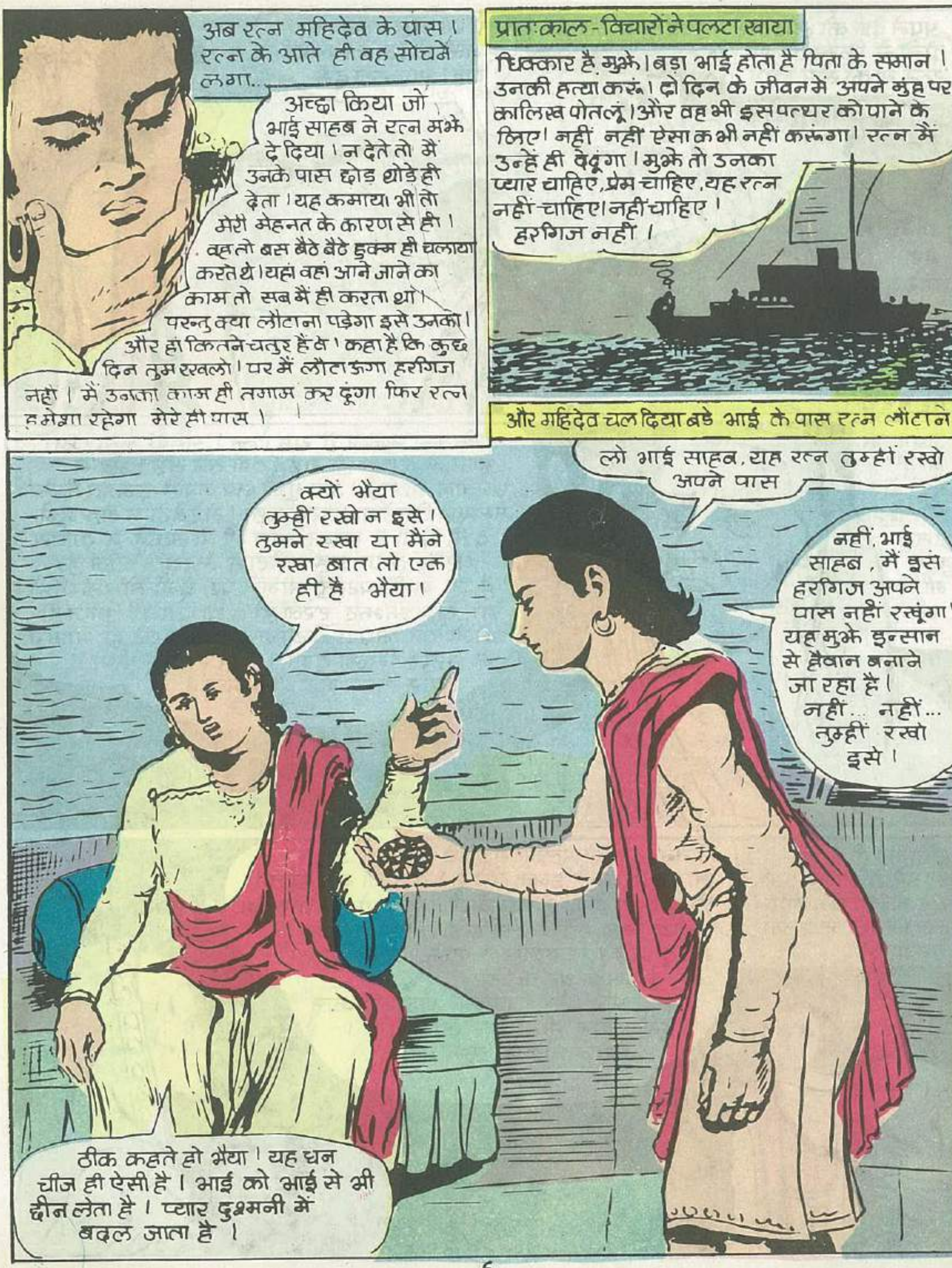

अब रत्न महिदेव के पास। रत्न के आते ही वह सोचने लगा..
अच्छा किया जो भाई साहब ने रत्न मझे दे दिया। न देते तो मैं उनके पास छोड़ थोड़े ही देता। यह कमाया भी तो मेरी मेहनत के कारण से ही। वह तो बस बैठे बैठे हुक्म ही चलाया करते थे। यहां वहां आने जाने का काम तो सब मैं ही करता था। परन्तु क्या लौटाना पड़ेगा इसे उनको। और हां कितने चतुर हैं वे। कहा है कि कुछ दिन तुम रखलो। पर मैं लौटाऊंगा हरगिज नहीं। मैं उनका काम ही तमाम कर दूंगा फिर रत्न हमेशा रहेगा मेरे ही पास।
प्रातःकाल - विचारों ने पलटा खाया
धिक्कार है मुझे। बड़ा भाई होता है पिता के समान। उनकी हत्या करूं। दो दिन के जीवन में अपने मुंह पर कालिख पोतलूं। और वह भी इस पत्थर को पाने के लिए। नहीं नहीं ऐसा कभी नहीं करूंगा। रत्न मैं उन्हें ही देदूंगा। मुझे तो उनका प्यार चाहिए, प्रेम चाहिए, यह रत्न नहीं चाहिए। नहीं चाहिए। हरगिज नहीं।
और महिदेव चल दिया बड़े भाई के पास रत्न लौटाने
लो भाई साहब, यह रत्न तुम्हीं रखो अपने पास
क्यों भैया तुम्हीं रखो न इसे। तुमने रखा या मैंने रखा बात तो एक ही है भैया।
नहीं, भाई साहब, मैं इसे हरगिज अपने पास नहीं रखूंगा। यह मुझे इन्सान से हैवान बनाने जा रहा है। नहीं... नहीं... तुम्हीं रखो इसे।
ठीक कहते हो भैया। यह धन चीज ही ऐसी है। भाई को भाई से भी छीन लेता है। प्यार दुश्मनी में बदल जाता है।

अपने देश को लौटकर पहला काम जो उन दोनों ने किया वह था रत्न मां को सौंप दिया
लो मां यह रत्न । हमारी विदेश की कमाई है यह। आप रखें इसे
मेरे प्यारे बच्चों। मैं आज कितनी खुश हूं। तुम कितने लायक हो। कितने प्यारे, कितने अच्छे मेरे बच्चे।
अब रत्न मां की मुट्ठी मे और क्या असर हुआ मां पर भी...
कितना सुन्दर है यह रत्न। अहा। अहा। हा। आज मैं धन्य हो गई। बडी बन गई। अब मैं धनवान हो गई। अब मुझे सब जगह इज्जत मिलेगी, सम्मान मिलेगा। परन्तु हां। मेरे बेटों ने यह मुझे दे तो दिया है परन्तु माग भी तो सकते हैं वापिस। परन्तु क्या यह लौटाने लायक चीज है। है तो नहीं परन्तु मांगने पर देनी तो पडेगी ही। हां, यह झंझट रखा ही क्यों जाये। आज ही दोनो को निपटा क्यों न दूं। शाम को ही भोजन में जहर मिला दूगी। बस रास्ता साफ। फिर रत्न मेरा और मेरा।
सोच ही रही थी कि सामने से आगये दोनों बेटे अहिदेव व महिदेव- बस विचारों ने पलटा खाया और.....
कितने प्यारे से सलोने से बच्चे हैं मेरे। क्या सोच रही थी मै इनके बारे में। इनको मार डालूं। जिनको अपने पेट से पैदा किया, पाला पोसा, खिलाया पिलाया, खुद गीले में सोई इन्हें सूखे में सुलाया। मार दूं इन्हें। धिक्कार है मुझे। इनकी हत्या कर दू इस पत्थर के लिए। और मैं- जिसको आज मरे कल दूसरा दिन होना है- जहर दे दूं। धिक्कार है मुझे।

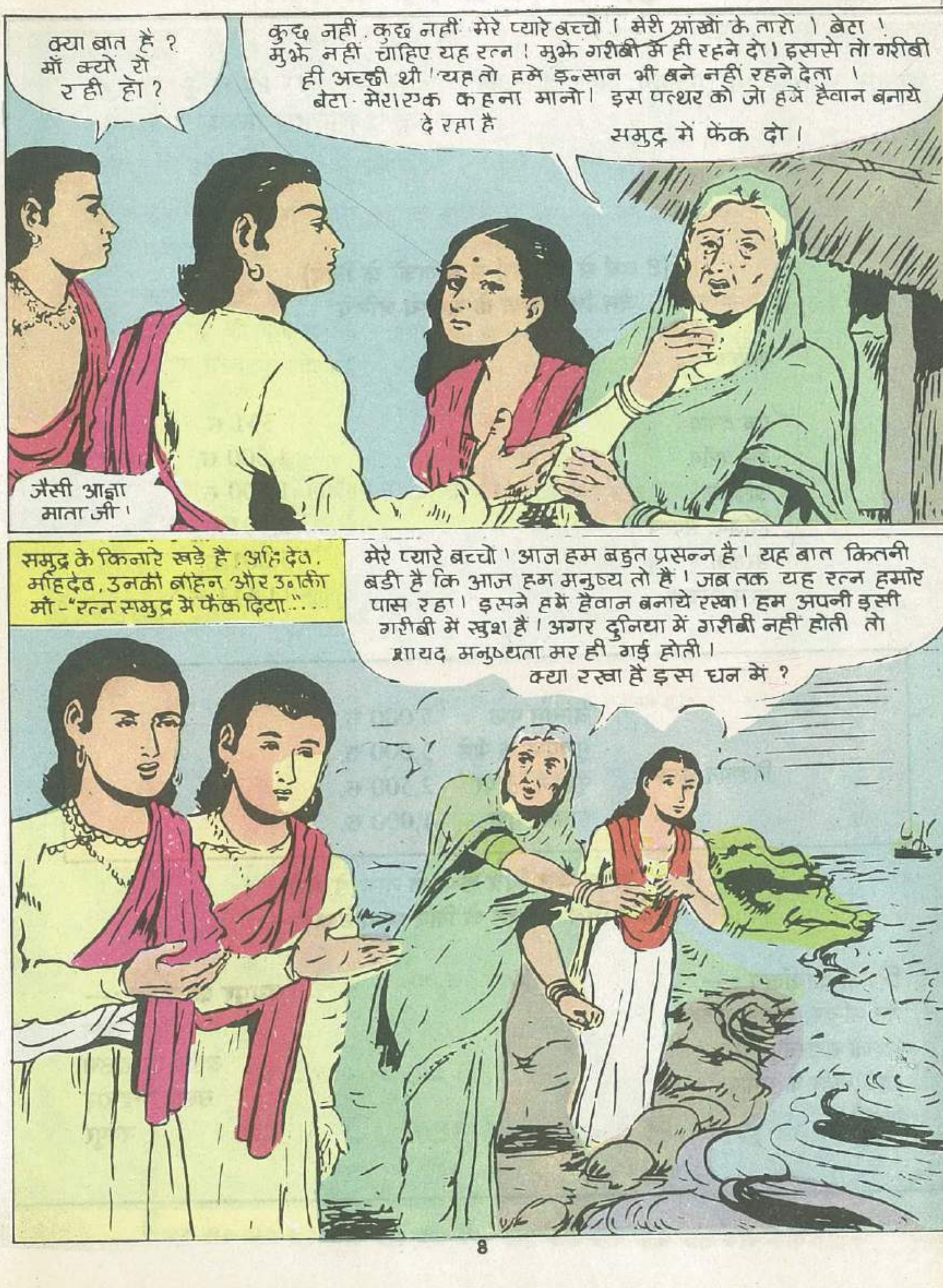

क्या बात है ? माँ क्यों रो रही हो ?
कुछ नहीं. कुछ नहीं मेरे प्यारे बच्चों। मेरी आंखों के तारों। बेटा! मुझे नहीं चाहिए यह रत्न! मुझे गरीबी में ही रहने दो। इससे तो गरीबी ही अच्छी थी। यह तो हमें इन्सान भी बने नहीं रहने देता। बेटा- मेरा एक कहना मानो। इस पत्थर को जो हमें हैवान बनाये दे रहा है समुद्र में फेंक दो।
जैसी आज्ञा माता जी।
समुद्र के किनारे खड़े है. अहिदेव. महिदेव, उनकी बहिन और उनकी माँ -"रत्न समुद्र में फेंक दिया."...
मेरे प्यारे बच्चो। आज हम बहुत प्रसन्न है। यह बात कितनी बडी है कि आज हम मनुष्य तो हैं। जब तक यह रत्न हमारे पास रहा। इसने हमें हैवान बनाये रखा। हम अपनी इसी गरीबी में खुश है। अगर दुनिया में गरीबी नहीं होती तो शायद मनुष्यता मर ही गई होती। क्या रखा है इस धन में ?

(8 वर्ष से 80 वर्ष से बालकों के लिए)
जैन चित्र कथा के सदस्य बनिये

वार्षिक

पंच वर्षीय	351 रु.
दस वर्षीय	1,000 रु.
आजीवन	1,500 रु.
विशिष्ट सदस्य	2,501 रु.
संरक्षक	5,001 रु.
परम संरक्षक	11,111 रु.

विज्ञापन शुल्क	अन्तिम पृष्ठ	5,000 रु.
	मुखपृष्ठ के पीछे	3,000 रु.
	पृष्ठ नं. 3 पर	2,500 रु.
	सामान्य पृष्ठ	1,000 रु.

ड्राफ्ट जैन चित्र कथा के नाम से भेजें
जैन चित्र एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें—

दिल्ली कार्यालय :—
जैन मन्दिर, गुलाब वाटिका
दिल्ली सहारनपुर रोड़
लोनी बॉर्डर के समीप
दिल्ली

जयपुर कार्यालय :—
गोधा सदन
अलसीसर हाउस
संसार चन्द्र रोड़
जयपुर

दिल्ली जैन संघ, बम्बई

जैन संस्कृति की रक्षा एवं भाषी संगठन के लिए दिल्ली जैन संघ के सदस्य बने तथा अपना सहयोग प्रदान करें।

संस्था के उद्देश्य संस्था के उद्देश्य

1. दिल्ली एवम् उसके आस पास के इलाके से आये हुये जैन भाईयों एवम् उनके परिवारों को एक जूट करना
2. मानव सेवा ही ईश्वर का दूसरा रूप है इसे ध्यान में रख कर जरूरत मन्दों की मदद करना
3. असहायों की यथा सम्भव सहायता करना इस उद्देश्य के साथ-साथ और भी सेवा कार्य के उद्देश्य संस्था के उद्देश्य हैं।

पता :—
7/9 मंगलदास मारकेट, बिल्डिंग नं. 2, चोथा माला, बम्बई नं.- 4000002
२५४३०१

For Your Requirements of

ALL KINDS OF BOOKS
ON

☐ MEDICAL

☐ TECHNICAL

☐ GENERAL

☐ EDUCATIONAL TEXT BOOKS

RING, Write or Visit : Phone-3279128

M/s College Book Store

Publishers — Wholesellers — Importers
1701-2, Nai Sarak, Delhi—110006

राहुल और दीपू
लड़ाई का घर
अरे राहुल, क्यों लड़ रहे हो ?
मम्मी ! दीपू ने मेरी कॉमिक्स छीनली।
तुम लोग लड़ाई का घर क्यों लाते हो ?
मम्मी! मुझे तो मेरे दोस्त ने दी
वापिस करदो उसे लड़ाई मिट जायेगी
नहीं, पहले मैं उसे पूरी पढ़ूंगा।
पापा का प्रवेश
लो बेटे! यह जैन कॉमिक्स जिससे कुछ ज्ञान हो।
पापा! मम्मी तो कहती है कि कॉमिक्स लड़ाई का घर है।
नहीं बेटा! जैन कॉमिक्स पढने से लड़ाई मिटती है।
पापा! कॉमिक्स पढने से लड़ाई कैसे मिटती है?
बेटा! जैन धर्म लड़ना नहीं प्रेम करना सिखाता है। इसका जैन कॉमिक्स में वर्णन है।
तब तो हम जैन कॉमिक्स रोज पढेंगे पापा जी।
सरल शिक्षा का एक विचार,
जैन कॉमिक्स का हो प्रचार